

॥ वास्तु मण्डल देवता ॥

वास्तु पुरुष की कथा

वास्तु पुरुष की कल्पना भूखंड में एक ऐसे औंधे मुंह पड़े पुरुष के रूप में की जाती है, जिसमें उनका मुंह ईशान कोण व पैर नैऋत्य कोण की ओर होते हैं। उनकी भुजाएं व कंधे वायव्य कोण व अग्निकोण की ओर मुड़ी हुई रहती है।

मत्स्यपुराण के अनुसार देवताओं और असुरों का युद्ध हो रहा था। इस युद्ध में असुरों की ओर से अंधकासुर और देवताओं की ओर से भगवान शिव युद्ध कर रहे थे। युद्ध में दोनों के पसीने की कुछ बूंदें भूमि पर गिरी तो एक अत्यंत बलशाली विराट पुरुष की उत्पत्ति हुई। उस विराट पुरुष ने पूरी धरती को ढक लिया उस विराट पुरुष से देवता और असुर दोनों ही भयभीत हो गए।

देवताओं को लगा कि यह असुरों की ओर से कोई पुरुष है। जबकि असुरों को लगा कि यह देवताओं की तरफ से कोई नया देवता प्रकट हो गया है। इस विस्मय के कारण युद्ध थम गया और उसके बारे में जानने के लिए देवता और असुर दोनों ने उस विराट पुरुष को पकड़ कर ब्रह्मा जी के पास ले गए। और ब्रह्मादेव से उस विराट पुरुष के बारे में बताने का आग्रह किया।

ब्रह्मा जी ने उस बृहदाकार पुरुष के बारे में कहा कि यह भगवान शिव और अंधकासुर के युद्ध के दौरान उनके शरीर से गिरे पसीने की बूंदों से इस विराट पुरुष का जन्म हुआ है इसलिए आप लोग इसे धरती पुत्र भी कह सकते हैं।

ब्रह्मादेव ने उस विराट पुरुष को संबोधित कर उसे अपने मानस पुत्र होने की संज्ञा दी और उसका नाम करण करते हुए कहा कि आज से तुम्हें संसार में वास्तु पुरुष के नाम से जाना जाएगा। और तुम्हें संसार के कल्याण के लिए धरती में समाहित होना पड़ेगा।

मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि जो कोई व्यक्ति धरती के किसी भी भू-भाग पर कोई भी भवन, नगर, तालाब, मंदिर, आदि का निर्माण कार्य तुम को ध्यान में रखकर करेगा उसको देवता कार्य की सिद्धि, संवृद्धि और सफलता प्रदान करेंगे और जो कोई निर्माण कार्य में अपने मन कि करेगा उसे असुर तकलीफ और अड़चने देंगे। साथ ही जो भी निर्माण कार्य के समय पूजन जैसे- भूमिपूजन, देहलीपूजन, वास्तुपूजन के दौरान जो भी होम-हवन नैवेद्य तुम्हारे नाम से चढ़ाएगा वहीं तुम्हारा भोजन होगा।

ऐसा सुनकर वह वास्तुपुरुष धरती पे आया और ब्रह्मादेव के निर्देशानुसार एक विशेष मुद्रा में धरती पर बैठ गया जिससे उसकी पीठ नैऋत्य कोण व मुख ईशान्य कोण में था इसके उपरांत वह अपने दोनों हांथों को जोड़कर पिता ब्रह्मादेव व धरतीमाता (अदिति) को नमस्कार करते हुए औंधे मुंह धरती में समाने लगा उसको विराट शरीर होने की वजह से हो रही मुश्किलों की वजह से देवताओं व असुरों ने उसके अंगों को जगह-जगह से पकड़कर उसे धरती में समाने में उसकी मदद की। अब जिस अंग को जिस देवता व असुर ने जहां से भी पकड़ रखा था आगे उसी अंग-पद में उसका वास अथवा स्वामित्व हुआ।

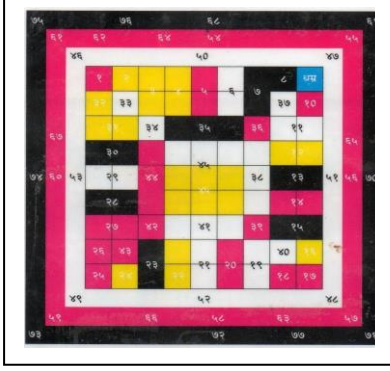
देवताओं ने वास्तु पुरुष से कहा तुम जैसे भूमि पर पड़े हुए हो वैसे ही सदा पड़े रहना और तीन माह में केवल एक बार ही दिशा बदलना।

उपर्युक्त तथ्यों को देखते हुए हमें किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य वास्तु के अनुरूप ही करना चाहिए। अगर वास्तुपुरुष की इस औंधे मुंह लेटी हुई अवस्था के अनुसार भूखंड की लंबाई और चौड़ाई को 9 बराबर भागों में बांटा जाए तो इस भूखंड के 81 भाग बनते हैं जिन्हें वास्तुशास्त्र में पद कहा गया है जिस पद पर जो देवता वास करते हैं उन्हीं के अनुकूल उस पद का प्रयोग करने को कहा गया है। वास्तुशास्त्र में इसे ही 81 पद वाला वास्तु पुरुष मंडल कहा जाता है।

- वास्तु मण्डल के लिए नैर्ऋत्य कोण में ६४ कोष्ठात्मक अथवा ८१ कोष्ठात्मक बनाने का विधान है।
- गृहे प्रसादे च शिख्यादि क्रम विहितः (मत्स्य पुराण) इस वचन के अनुसार यज्ञ आदि में शिखी आदि देवताओं का आवाहन करते हैं।
- रुद्र कल्पद्रुम / शारदा तिलक ने तो यज्ञादि में ब्रह्म आदि देवताओं का ही प्रथम स्थापनादि विहित माना है।
- “ब्रह्माणमादितः कृत्वा शिखिनं वा क्रमेण तु” इस कारिका के अनुसार दोनों पक्ष शास्त्रानुमोदित हैं।

- वास्तुपूजाविधिं वक्ष्ये नववेश्म प्रवेशने ।
हस्तमात्रा लिखेद्रेखा दश पूर्वा दशोत्तराः ॥१॥
 - गृहमध्ये तण्डुलोपर्येकाशीतिपद भवेत् ।
पंचोत्तरान्वक्ष्यमाणांश्चत्वारिंशत्सु वा न्यसेत् ॥२॥
 - द्वात्रिंशद् बाह्यतः पूज्यास्तत्रान्तः स्थास्योदश ।
तेषां स्थानानि नामानि वक्ष्यामि क्रमशोऽधुना ॥३॥ नारद पुराण
 - यजोमान के हाथ की लम्बाई x चौड़ी वेदी पर पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण १० रेखा बनायें जिसमें ८१ पद (कोष्ठक) बनेंगे। जिसमें से भीतर १३, बाहर ३६, मेखलाओं में २८ देवता स्थापित होंगे। कुल ७७ देवता हैं। इनकी पूजा ईशान कोण से प्रारम्भ होगी।
 - अन्य वास्तुशास्त्रों में कर्ण भेद से ५१ पद, ६४ पद, ८१ पद, १०० पद, ११९ पद, १४४ पद, १६९ पद, १९६ पद, १००० पद, और लक्षपद के वास्तु मण्डल रचना प्रकार भेद सहित वर्णित हैं। किन्तु ...
 - एकाशीतिपदं वास्तु गृहकर्मणि शस्यते ।
चतुः षष्टिपदं वास्तु प्रासादे षु प्रशस्यते ॥ मत्स्य पुराण
 - ८१ पद का वास्तु मण्डल गृहप्रवेशकर्ण में और देव मन्दिर, देव यज्ञ वेदी तथा राजाओं के प्रसाद के शोधन के लिये ६४ पद का वास्तु मण्डल श्रेष्ठ है।
- गृह वास्तुपीठ दस रेखा और इक्यासी पद ।
 - शिख्यादि ६३ देवता ।
 - ईशान कोण से आरम्भ कर शिखी आदि देवताओं का स्थापन करें।
 - उग्रसेन आदि १४ अधिक देवता हैं।
 - मण्डप, वास्तुपीठ नव रेखा और चौसठ पद (कोष्ठ) ।
 - ब्रह्मादि ६३ देवता ।
 - मध्य स्थित चार कोष्ठों से ब्रह्मा आदि वास्तु मण्डल देवताओं का स्थापन करें।

॥ ८१ पद वास्तु मण्डल देवतानाम् आवाहनम् होमः ॥



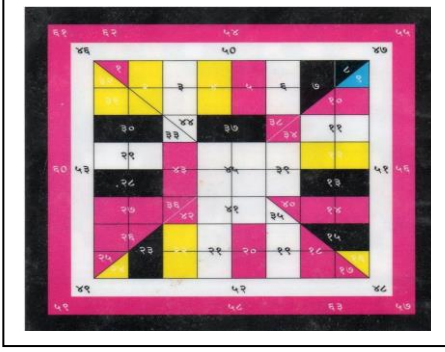
ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वमेहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो ।
मदृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें ।

- | | | |
|-----------------------|------------------------|--------------------------|
| 1. ॐ ब्रह्मणे नमः | 28. ॐ भृंगराजाय नमः | 55. ॐ अग्नये नमः |
| 2. ॐ अर्यमणे नमः | 29. ॐ मृगाय नमः | 56. ॐ यमाय नमः |
| 3. ॐ विवस्वते नमः | 30. ॐ पितृभ्यो नमः | 57. ॐ निर्ऋतये नमः |
| 4. ॐ मित्राय नमः | 31. ॐ दौवारिकाय नमः | 58. ॐ वरुणाय नमः |
| 5. ॐ पृथ्वीधराय नमः | 32. ॐ सुग्रीवाय नमः | 59. ॐ वायवे नमः |
| 6. ॐ जयाय नमः | 33. ॐ पुष्पदंताय नमः | 60. ॐ कुबेराय नमः |
| 7. ॐ सवित्रे नमः | 34. ॐ वरुणाय नमः | 61. ॐ ईशानाय नमः |
| 8. ॐ बिबुधाधिपाय नमः | 35. ॐ असुराय नमः | 62. ॐ ब्रह्मणे नमः |
| 9. ॐ जयाय नमः | 36. ॐ शेषाय नमः | 63. ॐ अनंताय नमः |
| 10. ॐ राजयक्ष्मणे नमः | 37. ॐ पापाय नमः | 64. ॐ उग्रसेनाय नमः |
| 11. ॐ रुद्राय नमः | 38. ॐ रोगाय नमः | 65. ॐ डामराय नमः |
| 12. ॐ अद्भ्यो नमः | 39. ॐ अहये नमः | 66. ॐ हेतुकाय नमः |
| 13. ॐ आपवत्साय नमः | 40. ॐ मुख्याय नमः | 67. ॐ महाकालाय नमः |
| 14. ॐ शिखिने नमः | 41. ॐ भल्लाटाय नमः | 68. ॐ कालाप नमः |
| 15. ॐ पर्जन्याय नमः | 42. ॐ सोमाय नमः | 69. ॐ पिलिपिच्छाय नमः |
| 16. ॐ जयंताय नमः | 43. ॐ सर्पाय नमः | 70. ॐ खेचराय नमः |
| 17. ॐ कुलिशाय नमः | 44. ॐ अदितये नमः | 71. ॐ त्रिपारान्तकाय नमः |
| 18. ॐ सूर्याय नमः | 45. ॐ दितये नमः | 72. ॐ अग्निवैतालाय नमः |
| 19. ॐ सत्याय नमः | 46. ॐ चरक्यै नमः | 73. ॐ तलवासिने नमः |
| 20. ॐ भृशाय नमः | 47. ॐ विदार्यै नमः | 74. ॐ ध्रुवाय नमः |
| 21. ॐ आकाशाय नमः | 48. ॐ पूतनायै नमः | 75. ॐ करालाय नमः |
| 22. ॐ वायवे नमः | 49. ॐ पापराक्षस्यै नमः | 76. ॐ एकपदाय नमः |
| 23. ॐ पूष्णे नमः | 50. ॐ स्कंदाय नमः | 77. ॐ भीमरूपाय नमः |
| 24. ॐ वितथाय नमः | 51. ॐ अर्यम्णे नमः | 78. ॐ असिवैतालाय नमः |
| 25. ॐ गृहक्षताय नमः | 52. ॐ जृम्भकाय नमः | 79. ॐ शंकराय नमः |
| 26. ॐ यमाय नमः | 53. ॐ पिलिपिच्छाय नमः | 80. ॐ वास्तुपुरुषाय नमः |
| 27. ॐ गन्धर्वाय नमः | 54. ॐ इन्द्राय नमः | 81. ॐ अघोराय नमः |

॥ शिख्यादि वास्तु मण्डल देवतानाम् (गृह) आवाहनम् होमः ॥



ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो ।
मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें ।

- | | | |
|----------------------|--------------------------|----------------------------|
| 1. ॐ शिखिने नमः | 22. ॐ असुराय नमः | 43. ॐ पृथ्वीधराय नमः |
| 2. ॐ पर्जन्याय नमः | 23. ॐ शोषाय नमः | 44. ॐ आपवत्साय नमः |
| 3. ॐ जयन्ताय नमः | 24. ॐ पापाय नमः | 45. ॐ ब्रह्मणे नमः |
| 4. ॐ कुलिशायुधाय नमः | 25. ॐ रोगाय नमः | 46. ॐ चरक्यै नमः |
| 5. ॐ सूर्याय नमः | 26. ॐ अहये / नागाय नमः | 47. ॐ विदार्यै नमः |
| 6. ॐ सत्याय नमः | 27. ॐ मुख्याय नमः | 48. ॐ पूतनायै नमः |
| 7. ॐ भृशाय नमः | 28. ॐ भल्लाटाय नमः | 49. ॐ पापराक्षस्यै नमः |
| 8. ॐ आकाशाय नमः | 29. ॐ सोमाय नमः | 50. ॐ स्कंदाय नमः |
| 9. ॐ वायवे नमः | 30. ॐ सर्पाय / उरगाय नमः | 51. ॐ अर्यम्णे नमः |
| 10. ॐ पूष्णे नमः | 31. ॐ अदितये नमः | 52. ॐ जृम्भकाय नमः |
| 11. ॐ वितथाय नमः | 32. ॐ दित्यै नमः | 53. ॐ पिलिपिच्छाय नमः |
| 12. ॐ गृहक्षताय नमः | 33. ॐ आपाय / अद्भ्यो नमः | 54. ॐ इंद्राय नमः |
| 13. ॐ यमाय नमः | 34. ॐ सावित्राय नमः | 55. ॐ अग्नये नमः |
| 14. ॐ गन्धर्वाय नमः | 35. ॐ जयाय नमः | 56. ॐ यमाय नमः |
| 15. ॐ भृंगराजाय नमः | 36. ॐ रुद्राय नमः | 57. ॐ निर्ऋतये नमः |
| 16. ॐ मृगाय नमः | 37. ॐ अर्यम्णे नमः | 58. ॐ वरुणाय नमः |
| 17. ॐ पितृभ्यो नमः | 38. ॐ सवित्रे नमः | 59. ॐ वायवे नमः |
| 18. ॐ दौवारिकाय नमः | 39. ॐ विवस्वते नमः | 60. ॐ सोमाय / कुबेराय नमः |
| 19. ॐ सुग्रीवाय नमः | 40. ॐ बिबुधाधिपाय नमः | 61. ॐ ईशानाय / ईश्वराय नमः |
| 20. ॐ पुष्पदंताय नमः | 41. ॐ मित्राय नमः | 62. ॐ ब्रह्मणे नमः |
| 21. ॐ वरुणाय नमः | 42. ॐ राजयक्ष्मणे नमः | 63. अनन्ताय नमः |

● गृह वास्तु प्रयोग विशेष

- | | | |
|-----------------------|--------------------------|--------------------|
| 64. ॐ उग्रसेनाय नमः | 69. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | 74. ॐ एकपादाय नमः |
| 65. ॐ डामराय नमः | 70. ॐ अग्निवैतालाय नमः | 75. ॐ भीमरूपाय नमः |
| 66. ॐ महाकालाय नमः | 71. ॐ असिवैतालाय नमः | 76. ॐ खेचराय नमः |
| 67. ॐ पिलिपिच्छाय नमः | 72. ॐ कालाय नमः | 77. ॐ तलवासिने नमः |
| 68. ॐ हेतुकाय नमः | 73. ॐ करालाय नमः | |

॥ ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवतानां (मण्डप) आवाहनम् होमः ॥



ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः।
यत्चेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो।
मदृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

स्थापना हेतु आ. स्था. पू. एवं स्वाहाकार हेतु स्वाहा का प्रयोग करें।

- | | | |
|-----------------------|-----------------------|------------------------|
| 1. ॐ ब्रह्मणे नमः | 22. ॐ वायवे नमः | 43. ॐ सर्पाय नमः |
| 2. ॐ अर्यम्णे नमः | 23. ॐ पूष्णे नमः | 44. ॐ अदितये नमः |
| 3. ॐ विवस्वते नमः | 24. ॐ वितथाय नमः | 45. ॐ दित्यै नमः |
| 4. ॐ मित्राय नमः | 25. ॐ गृहक्षताय नमः | 46. ॐ चरक्यै नमः |
| 5. ॐ पृथ्वीधराय नमः | 26. ॐ यमाय नमः | 47. ॐ विदार्यै नमः |
| 6. ॐ सावित्राय नमः | 27. ॐ गन्धर्वाय नमः | 48. ॐ पूतनायै नमः |
| 7. ॐ सवित्रे नमः | 28. ॐ भृंगराजाय नमः | 49. ॐ पापराक्षस्यै नमः |
| 8. ॐ बिबुधाधिपाय नमः | 29. ॐ मृगाय नमः | 50. ॐ स्कन्दाय नमः |
| 9. ॐ जयाय नमः | 30. ॐ पितृभ्यो नमः | 51. ॐ अर्यम्णे नमः |
| 10. ॐ राजयक्ष्मणे नमः | 31. ॐ दौवारिकाय नमः | 52. ॐ जृम्भकाय नमः |
| 11. ॐ रुद्राय नमः | 32. ॐ सुग्रीवाय नमः | 53. ॐ पिलिपिच्छाय नमः |
| 12. ॐ अद्भ्यो नमः | 33. ॐ पुष्पदन्ताय नमः | 54. ॐ इन्द्राय नमः |
| 13. ॐ आपवत्साय नमः | 34. ॐ वरुणाय नमः | 55. ॐ अग्नये नमः |
| 14. ॐ शिखिने नमः | 35. ॐ असुराय नमः | 56. ॐ यमाय नमः |
| 15. ॐ पर्जन्याय नमः | 36. ॐ शोषाय नमः | 57. ॐ निर्ऋतये नमः |
| 16. ॐ जयन्ताय नमः | 37. ॐ पापाय नमः | 58. ॐ वरुणाय नमः |
| 17. ॐ कुलिशायुधाय नमः | 38. ॐ रोगाय नमः | 59. ॐ वायवे नमः |
| 18. ॐ सूर्याय नमः | 39. ॐ अहये नमः | 60. ॐ सोमाय नमः |
| 19. ॐ सत्याय नमः | 40. ॐ मुख्याय नमः | 61. ॐ ईशानाय नमः |
| 20. ॐ भृशाय नमः | 41. ॐ भल्लाटाय नमः | 62. ॐ ब्रह्मणे नमः |
| 21. ॐ आकाशाय नमः | 42. ॐ सोमाय नमः | 63. ॐ अनन्ताय नमः |

- **संकल्प** अद्यपूर्वोच्चारित एवं गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ प्रारब्धस्य अमुक कर्मणांगत्वेन अस्मिन् चतुःषष्टि कोष्ठात्मक वास्तु पीठे ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवतानां आवाहनं पूजनं च करिष्ये ।
- **वास्तु पीठस्य आग्नेयादि क्रमेण शंकुरोपणम् ।**
- **आग्नेय्याम्** ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डलेऽत्रावतिष्ठन्तु, ह्यायुर्बलकराः सदा ॥
- **नैऋत्याम्** ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डलेऽत्रावतिष्ठन्तु, ह्यायुर्बलकराः सदा ॥
- **वायव्याम्** ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डलेऽत्रावतिष्ठन्तु, ह्यायुर्बलकराः सदा ॥
- **ऐशान्याम्** ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डलेऽत्रावतिष्ठन्तु, ह्यायुर्बलकराः सदा ॥
- **आग्नेयादिषु चतुष्कोणेषु शंकूनारोप्य अग्नेयादि क्रमेणैव मासभक्तं दध्योदनं वा बलिं दद्यात् ।**
- **आग्नेय्याम् हाथ में जल लें** ॐ अग्निभ्योप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥ जल गिरा दें ।
- **नैऋत्याम् हाथ में जल लें** ॐ नैऋत्याधिपतिश्चैव नैऋत्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥ जल गिरा दें ।
- **वायव्याम् हाथ में जल लें** ॐ नमो वै वायुरक्षेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥ जल गिरा दें ।
- **ऐशान्याम् हाथ में जल लें** ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम् ॥ जल गिरा दें ।
- **आग्नेय्यादि क्रम से शंकू देवताओं को गन्ध, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य चढा दें ।**
- **अनेन शंकुरोपण पूर्वकं बलिदानेन चतुरस्र आग्नेय्यादि विदिग्देवताः प्रीयन्तां न मम ।**
- **रेखाकरण पूजनं**
- **पूर्व से पश्चिम वाली रेखा पर**
- 1. ॐ शान्तायै नमः
- 2. ॐ यशोवत्यै नमः
- 3. ॐ कान्तायै नमः
- 4. ॐ विशालायै नमः
- 5. ॐ प्राणवाहिन्यै नमः
- 6. ॐ सत्यै नमः
- 7. ॐ सुमनायै नमः
- 8. ॐ नन्दायै नमः
- 9. ॐ सुभद्रायै नमः

● दक्षिण से उत्तर वाली रेखा पर

- | | | |
|--------------------|-------------------|-------------------|
| 1. ॐ हिरण्यायै नमः | 4. ॐ विभूतयै नमः | 7. ॐ जयायै नमः |
| 2. ॐ सुव्रतायै नमः | 5. ॐ विमलायै नमः | 8. ॐ कालायै नमः |
| 3. ॐ लक्ष्म्यै नमः | 6. ॐ प्रियायै नमः | 9. ॐ विशोकायै नमः |

- हस्ते अक्षतानादाय मनोजूतिरीति मन्त्रेण ॐ भूर्भुवः स्वः रेखादेवता सुप्रतिष्ठिता वरदाः भवत ।
- रेखादेवताभ्यो नमः गन्ध, पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य चढा दें ।
- अनेन रेखादेवतानां पंचोपचारैः कृतेन पूजनेन रेखा देवताः प्रीयन्तां न मम ।

1. ब्रह्मणे

मध्य हृद-नाभ्यां

- ॐ ब्रह्म यज्ञानम् प्रथमम् पुरस्ताद्विंसीमतः सुरुची वेन आवः ।
सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिम सतश्चिविवः ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मामणम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

2. अर्यम्णे

पूर्व दक्षिण स्तने आदित्य देव

- ॐ अर्यमणम् बृहस्पतिं इन्द्रं दानाय चोदय ।
वाचं विष्णुं ७ सरस्वतीं ७ सवितारं च वाजिन ७ स्वाहा ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः । अर्यमणम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो अर्यमन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

3. विवस्वते

दक्षिण दक्षिण जठर मृत्युदेव

- ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्तऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वते नमः । विवस्वन्तम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो विवस्वन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

4. मित्राय

पश्चिम वाम जठर हलदर

- ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोवो देवस्य सानसि । द्युम्नचित्र श्रवस्तमम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः । मित्रम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो मित्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

5. पृथ्वीधराय

उत्तर वाम स्तने भगवान् अनन्त शेषनाग

- ॐ यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये ।
यदेनश्चकृमा वयमिदन् तदव यजामहे स्वाहा ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधराय नमः । पृथ्वीधरम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो पृथ्वीधर इहागच्छ इहतिष्ठ ।

6. सावित्राय

आग्नेय दक्षिण हस्ते गंगा

- ॐ वसोः पवित्रामसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्राय नमः । सावित्रम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो सावित्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

7. सवित्रे

आग्नेय दक्षिण हस्ते वेदमाता गायत्री

- ॐ उदुत्यन् जातवेदसन् देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः । सवितारम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो सवितः इहागच्छ इहतिष्ठ ।

8. विबुधाधिपाय

नैऋत्य नैऋत्यपद पूर्वार्धे

- ॐ सबोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन् ।
युयोद्ध्य स्मद्वेषा ७ सि विश्वकर्मणे स्वाहा ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः विबुधाधिपाय नमः । विबुधाधिपम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो विबुधाधिप इहागच्छ इहतिष्ठ ।

9. जयाय

नैऋत्य नैऋत्यपद उत्तरार्धे हरि इंद्र

- ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातन्ते अर्वन् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः जयाय नमः । जयम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो जय इहागच्छ इहतिष्ठ ।

10. राजयक्ष्मणे

वायव्य वाम हस्ते भगवान् कार्तिकेय

- ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शस ऽ उपचितामसि ।
अथो शतस्य यक्ष्माणाम् पाकारोरसि नाशनी ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः । पावनम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो पावन इहागच्छ इहतिष्ठ ।

11. रुद्राय

वायव्य वाम हस्ते भगवान् महेश्वर

- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽ पापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभि चाकशीहि ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः । रुद्रम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

12. अद्भ्यो

ईशान वाम मुखे हिमालय

- ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः । अपः आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो आप इहागच्छ इहतिष्ठ ।

13. आपवत्साय

ईशान उरसि भगवान शिव की अर्धांगिनी उमा

- ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः आपवत्साय नमः । आपवत्सम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो आपवत्स इहागच्छ इहतिष्ठ ।

❖ वास्तु मण्डल के बाहरी ३२ पदों के देव

14. शिखिने

ईशान शिरसि भगवान शंकर

- ॐ तमीशानं जगतस् तस्थुषस्पति न्धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः शिखिने नमः । शिखिनम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो शिखिन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

15. पर्जन्याय

ई.अ. १ पद दक्षिण नेत्र वर्षा के देव वृष्टिमान

- ॐ महोँ इन्द्रोय ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ २ इव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ।
उपयाम गृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः । पर्जन्यम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो पर्जन्य इहागच्छ इहतिष्ठ ।

16. जयन्ताय

ई.अ. २ पद दक्षिण श्रोत्र भगवान कश्यप

- ॐ उदुत्यन् जातवेदसन् देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः जयन्ताय नमः । जयन्तम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो जयन्त इहागच्छ इहतिष्ठ ।

17. कुलिशायुधाय

ई.अ. ३ पद दक्षिण अंसे देवराज इंद्र

- ॐ इन्द्र आसान् नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेना नामभि भञ्जती नाञ्जयन्ती नाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः कुलिशायुधाय नमः । कुलिशायुधम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो कुलिशायुध इहागच्छ इहतिष्ठ ।

18. सूर्याय

ई.+अ. ४ पद दक्षिण बाहौ भगवान् सूर्य

- ॐ सूर्य रश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योति रुदयां२ अजस्रम् । तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान् सम्पशयन् विश्वा भुवनानि गोपाः ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः । सूर्यम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ ।

19. सत्याय

ई.+अ. ५ पद दक्षिण प्रबाहौ धर्मराज

- ॐ व्रतेन दीक्षा माप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सत्याय नमः । सत्यम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो सत्य इहागच्छ इहतिष्ठ ।

20. भृशाय

ई.+अ. ६ पद दक्षिण कूपरी कामदेव

- ॐ भायै दार्वारहारम् प्रभायाऽ अग्न्येधम् ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन् देवल्लोकाय पेशितारम् मनुष्यलोकाय प्रकरितारं ७ सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमव ऋत्यैवधायो पमन्थितारम् मेधाय वासः पल्पूलीम् प्रकामाय रजयित्रीम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः भृशाय नमः । भृशम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो भृश इहागच्छ इहतिष्ठ ।

21. आकाशाय

ई.+अ. ७ पद दक्षिण प्रबाहौ अंतरिक्ष नभोदेव

- ॐ ह ७ सः शुचिषद् वसुरन्त रिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद् वरसदृत सदह्यो म सदब्जा गोज ऋतजा अद्रिजा ऋतम् वृहत् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः । आकाशम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो आकाश इहागच्छ इहतिष्ठ ।

22. वायवे

अनिकोण दक्षिण प्रबाहौ मारुत, अनिल, वायुदेव

- ॐ अप्सवग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुद्ध्यसे । गर्भे संजायसे पुनः ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः । वायुम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो वायो इहागच्छ इहतिष्ठ ।

23. पूष्णे

अ.+नै. १ पद मणिबंध मातृगण

- ॐ पूषा पंचाक्षरेण पंच दिश उदजयत्ता उज्जेष ७ सविता षडक्षरेण षडृतनुदजयतानुज्जेषम् मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशूनुदजयन्तानुज्जेषम् बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्री मुदजयत्ता मुज्जेषम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः । पूषणम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो पूषन् इहागच्छ इहतिष्ठ ।

24. वितथाय

अ.+नै. २ पद दक्षिण पार्श्व अधर्म

- ॐ सविता प्रथमे हन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे । मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः वितथाय नमः । वितथम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो वितथ इहागच्छ इहतिष्ठ ।

25. गृहक्षताय

अ.+नै. ३ पद दक्षिण पार्श्व बुध देव

- ॐ गृहामा बिभीत मा वेद्ध्वमूर्जम् विभ्रत एमसि । ऊर्जम् बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः ।
- ॐ भूर्भुवः स्वः गृहक्षताय नमः । गृहक्षतम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो गृहक्षत इहागच्छ इहतिष्ठ ।

26. यमाय

अ.+नै. ४ पद दक्षिण उरुभागे यमराज

- ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्तऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः । यमम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो यम इहागच्छ इहतिष्ठ ।

27. गन्धर्वाय

अ.+नै. ५ पद दक्षिण जानौ पुलम, गातु

- ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः । इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः । मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान् ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽ ईडितः ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः । गन्धर्वम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो गन्धर्व इहागच्छ इहतिष्ठ ।

28. भृंगराजाय

अ.+नै. ६ पद दक्षिण जंघायां नैऋति देव

- ॐ कस्त्वा युनक्ति सत्त्वा युनक्ति कस्मैत्वा युनक्ति तस्मैत्वा युनक्ति । कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः भृंगराजाय नमः । भृंगराजम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो भृंगराज इहागच्छ इहतिष्ठ ।

29. मृगाय

अ.+नै. ७ पद दक्षिण स्फिचि

- ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः । मृगम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो मृग इहागच्छ इहतिष्ठ ।

30. पितृभ्यो

नैऋत्य कोण दक्षिण पादतले पितृलोक के देव

- ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । पितामहेभ्यः स्वधा यिभ्यः स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्यः स्वधा यिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरो तीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्धवम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः । पितृन् आवाह्यामि स्थापयामि । भो पितरः इहागच्छ इहतिष्ठ ।

31. दौवारिकाय

नै.+वा. १ पद वाम स्फिचि भगवान नंदी, द्वारपाल

- ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति व्याधी महारथो जायतान् दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान् निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिकाय नमः । दौवारिकम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो दौवारिक इहागच्छ इहतिष्ठ ।

32. सुग्रीवाय

नै.+वा. २ पद वाम जंघायां प्रजापति मनु

- ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतन् तीव्र जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो सुग्रीव इहागच्छ इहतिष्ठ ।

33. पुष्पदन्ताय

नै.+वा. ३ पद वाम जानौ वायुदेव

- ॐ नक्षत्रेभ्यः स्वाहा, नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा, होरात्रेभ्यः स्वाहा, धमासेभ्यः स्वाहा, मासेभ्यः स्वाहा, ऋतुभ्यः स्वाहा, त्वेभ्यः स्वाहा, संवत्सराय स्वाहा, द्यावापृथिवीभ्या ७ स्वाहा, चन्द्राय स्वाहा, सूर्याय स्वाहा, रश्मीभ्यः स्वाहा, वसुभ्यः स्वाहा, रुद्रभ्यः स्वाहा, दित्येभ्यः स्वाहा, मरुद्भ्यः स्वाहा, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, मूलेभ्यः स्वाहा, शाखाभ्यः स्वाहा, वनस्पतिभ्यः स्वाहा, पुष्पेभ्यः स्वाहा, फलेभ्यः स्वाहा, औषधीभ्यः स्वाहा ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्ताय नमः । पुष्पदन्तम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो पुष्पदन्त इहागच्छ इहतिष्ठ ।

34. वरुणाय

नै.+वा. ४ पद वाम उरौ जल, समुद्र के देव लोकपाल

- ॐ वरुणस्योत्तम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो । वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन मासीद ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः । वरुणम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ ।

35. असुराय

नै.+वा. ५ पद वाम पार्श्वे सिंहीका पूत्र राहु

- ॐ ये रुपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निं घ्राँल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः असुराय नमः । असुरम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो असुर इहागच्छ इहतिष्ठ ।

36. शोषाय

नै.+वा. ६ पद वाम पार्श्वे शनिश्चर

- ॐ असवे स्वाहा, वसवे स्वाहा, विभुवे स्वाहा, विवस्वते स्वाहा,
गणश्रिये स्वाहा, गणपतये स्वाहा, भिभुवे स्वाहा, धिपतये स्वाहा, शूषाय
स्वाहा, स ७ सर्पाय स्वाहा, चन्द्राय स्वाहा, ज्योतिषे स्वाहा, मलिम्लुचाय
स्वाहा, दिवा पतयते स्वाहा ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः शोषाय नमः । शोषम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो शोष इहागच्छ इहतिष्ठ ।

37. पापाय

नै.+वा. ७ पद वाम बाहौ क्षय

- ॐ अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः । अरं वहन्ति मन्यवे ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पापाय नमः । पापम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो पाप इहागच्छ इहतिष्ठ ।

38. रोगाय

वायव्य कोण वाम बाहौ ज्वर

- ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखन्तिवषिः केशाश्च श्मश्रुणि ।
राजा मे प्राणो अमृत ७ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः रोगाय नमः । रोगम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो रोग इहागच्छ इहतिष्ठ ।

39. अहये

वा.+ई. १ पद वाम प्रबाहौ नाग, वाशुकी

- ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु ।
ये अन्तिरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः अहये नमः । अहिम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो अहे इहागच्छ इहतिष्ठ ।

40. मुख्याय

वा.+ई. २ पद वाम कूर्परे भगवान विश्वकर्मा

- ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण
आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत
माघ श ७ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्नीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्याय नमः । मुख्यम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो मुख्य इहागच्छ इहतिष्ठ ।

41. भल्लाटाय

वा.+ई. ३ पद वाम बाहौ येति, चन्द्रदेव

- ॐ घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद ऽ आसीद घृताच्यस्युपभृन्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद आसीद घृताच्यसिद् ध्रुवा नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद ऽ आसीद प्रियेण धाम्ना प्रिय ७ सद ऽ आसीद । ध्रुवा असद नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञम् पाहि यज्ञपतिम् पाहि मां यज्ञन्यम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः भल्लाटाय नमः । भल्लाटम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो भल्लाट इहागच्छ इहतिष्ठ ।

42. सोमाय

वा.+ई. ४ पद वाम बाहौ भगवान् कुबेर

- ॐ वय ७ सोम व्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सोमाय नमः । सोमम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो सोम इहागच्छ इहतिष्ठ ।

43. सर्पाय

वा.+ई. ५ पद वाम अंसे भगवान् शेषनाग, भुजग

- ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजा ७ सि । यो अस्कभायदुत्तर ७ सधस्थं विचक्रमाण स्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सर्पाय नमः । सर्पम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो सर्प इहागच्छ इहतिष्ठ ।

44. अदितये

वा.+ई. ६ पद वाम श्रोत्र देवमाता, मतांतर से देवी लक्ष्मी

- ॐ अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः अदितये नमः । अदितिम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो अदिते इहागच्छ इहतिष्ठ ।

45. दित्यै

वा.+ई. ७ पद वाम नेत्रे दैत्यमाता

- ॐ ये देवा देवेष्वधि देवत्व मायन्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य । येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधिस्नुषु ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः दित्यै नमः । दितिम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो दिते इहागच्छ इहतिष्ठ ।

❖ वास्तु मण्डल के बाहर प्रथम मेखला यानि श्वेत परिधि ईशानादि क्रम से

46. चरक्यै

ईशान

- ॐ इन्धानास्त्वा शत ७ हिमा द्युमन्त ७ समिधीमहि ।
वयस्वन्तो वयस्कृत ७ सहस्वन्तः सहस्कृतम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः चरक्यै नमः । चरकीम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो चरकि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

47. विदार्यै

अग्निकोण

- ॐ असुन्वन्तम् यजमानम् इच्छस्ते नस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः विदार्यै नमः । विदारीम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो विदारि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

48. पूतनायै

नैऋत्यकोण

- ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पूतनायै नमः । पूतनाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो पूतने इहागच्छ इहतिष्ठ ।

49. पापराक्षस्यै

वायव्यकोण

- ॐ इन्द्र आसान् नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेना नामभि भञ्जती नाञ्जयन्ती नाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः । पापराक्षसीम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो पापराश्रसि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

❖ वास्तु मण्डल के बाहर प्रथम मेखला यानि श्वेत परिधि पूर्वादि क्रम से

50. स्कन्दाय

पूर्व

- ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँ ७ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः । स्कन्दम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो स्कन्द इहागच्छ इहतिष्ठ ।

51. अर्यम्णे

दक्षिण

- ॐ यदद्य सूर उदितेऽ नागा मित्रो अर्यमा । सुवाति सविताभगः ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः । अर्यमणम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो अर्यमन इहागच्छ इहतिष्ठ ।

52. जृम्भकाय

पश्चिम

- ॐ सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय केवर्त्तन् तीर्थेभ्य आनन्दं विषमेभ्यो मैनाल ७ स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरात ७ सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भकाय नमः । जृम्भकम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो जृम्भक इहागच्छ इहतिष्ठ ।

53. पिलिपिच्छाय

उत्तर

- ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिद् महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मेनिष्ठयो पममात्यो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यम समानो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यस्मे सबन्धुर्यम संबधुर्निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ।
- ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छाय नमः । पिलिपिच्छम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो पिलिपिच्छ इहागच्छ इहतिष्ठ ।

❖ वास्तु मण्डल के बाहर द्वितीय मेखला यानि रक्तपरिधी के इन्द्रादी दशदिक्पाल देव

54. इन्द्राय

पूर्व

- ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र ७ हवेहवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः । इन्द्रम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

55. अग्नये

अग्निकोण

- ॐ त्वन्नो अग्ने तव देव पायुभिम्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७ रक्षमाणस्तव व्रते ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः । अग्निम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो अग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ ।

56. यमाय

दक्षिण

- ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः । यमम् आवाह्यामि स्थापयामि । भो यम इहागच्छ इहतिष्ठ ।

57. निर्ऋतये

नैऋत्य कोण

- ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छ स्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ- सात ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ठ ।

58. वरुणाय

पश्चिम

- ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ समा न आयुः प्रमोषीः॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः वरुणाय नमः । वरुणम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ ।

59. वायवे

वायुकोण

- ॐ आनो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर ७ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः वायवे नमः । वायुम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो वायो इहागच्छ इहतिष्ठ ।

60. सोमाय

उत्तर

- ॐ वय ७ सोम व्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः सोमाय नमः । सोमम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो सोम इहागच्छ इहतिष्ठ ।

61. ईशानाय

ईशान

- ॐ तमीशानं जगतस्त स्तृषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेद सामसदृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः ईशानाय नमः । ईशानम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ ।

62. ब्रह्मणे

ई.+पूर्व मध्य

- ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।
यः श ७ सते स्तुवते धायि पञ्च इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो ब्रह्मण इहागच्छ इहतिष्ठ ।

63. अनन्ताय

प.+नैऋत्य मध्य

- ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥
- ॐ भुर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः । अनन्तम् आवाह्यामि स्थापयामि ।
भो अनन्त इहागच्छ इहतिष्ठ ।

64. उग्रसेन	पर्व में इन्द्र से उत्तर
65. डामराय	दक्षिण में यम से उत्तर
66. महाकालाय	पश्चिम में वरुण से उत्तर
67. पिलिपिच्छाय	उत्तर में सोम से उत्तर
68. हेतुकाय	पर्व में
69. त्रिपुरान्तकाय	आग्नये में
70. अग्निवैतालाय	दक्षिण में
71. असिवैतालाय	नैऋत्य में
72. कालाय	पश्चिम में
73. करालाय	वायव्य में
74. एकपादाय	उत्तर में
75. भीमरुपाय	ईशान में
76. खेचराय	ईशान में
77. तलवासिने	नैऋत्य और पश्चिम के बीच में

- हस्ते अक्षतानादाय मनोजूतिरीति मन्त्रेण ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सुप्रतिष्ठिता वरदाः भवत ।
- ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहीताय वास्तु पुरुषाय नमः इति आवाहनादि षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात् ।

- प्रार्थना
 - ॐ देवेश वास्तु पुरुष सर्वविघ्न विदारण ।
शान्ति कुरु सुखं देहि यज्ञे स्मिन् मम सर्वदा ॥
 - ॐ श्वेतं चतुर्भुजं शान्तं कुण्डलाद्यैरलंकृतम् ।
पुस्तकं चाक्षमालां च वराभयकरं परम् ॥
 - पितृवैश्वानरोपेतं कुटिलभ्रूपशोभितम् ।
करालवदनं चैव आजानुकरलम्बितम् ॥

- अनेन यथाशक्ति ध्यान आवाहनादि षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहितो वास्तु पुरुषः प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ इति वास्तु मण्डल देवता स्थापनम् पूजनम् समाप्तम् ॥